अध्ययन सामग्री

विषय – हिन्दी

वर्ग – स्नातकोत्तर

सेमेस्टर – II

प्रश्नपत्र – VI

सुमन कुमारी

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी विभाग

हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय

आरा

'सूरदास के भ्रमरगीत'

से संबंधित प्रश्नोत्तर

Scanned with CamScanner

प्रश्न – 'श्रृंगार रस' का ऐसा सुन्दर उपालंभ काव्य दूसरा नहीं। आचार्य शुक्ल के कथन के आलोक में 'भ्रमरगीत' की समीक्षा कीजिए।
अथवा, उपालंभ काव्य की परम्परा में सूर के 'भ्रमरगीत' का स्थान निरूपित करें।

उत्तर – उपालंभ का सामान्य अर्थ है उलाहना। नायक अथवा नायिका में से किसी एक के प्रति अनुचित व्यवहार के प्रति दी गई उलाहना ही उपालंभ है। इसकी पुष्टि निम्नांकित लक्षणों से हो जाती है।

1. उपालम्भोयमोचिताचार प्रदर्शनम
2. उपालम्भो उरहनो
3. देबौ कछु उरहनो उपालंभ होत।

जैसे – 'मोहन ऐसो निठुर तुम्हें न शोभा देत।
हेर हियो लेत है फिर नाहिं सुधि लेत हैं।'

संस्कृत काव्यशास्त्र में उपालम्भ काव्य पर पृथक रूप से विचार नहीं किया गया है। वहाँ उपालंभ की गणना नायिका की सखी की चार कार्यों- मंडन, शिक्षा, उपालंभ और परिहास में की गई है। इस दृष्टि से उलाहना देकर नायक को नायिका के मनोनुकूल कराना ही उपालंभ है किन्तु उपालंभ मात्र उलाहना नहीं है, इसमें न वास्तविक शिकायत रहती है और न प्रेम पात्र की निंदा। यद्यपि इसमें अभासित यही होता है कि इसका आधार है गहरी आत्मियता और प्रेम। प्रेमी अपने प्रेम-पात्र से अलग होकर विकल एवं विह्वल हो जाता है। उसकी मनोत्कंठा तीव्र होकर उसे व्यथित कर देती है। पर, भावावेश और उसके मान में प्रेमानुभूति अधिक गहरी होती है। ऐसी ही मनः स्थिति में प्रेमी या प्रेमिका किसी सहृदय या सहचरी को माध्यम बनाकर अपने प्रेम पात्र को उपालंभ देते हैं। इस बहाने प्रेम पात्र की चर्चा के संबंध सामने आते हैं। प्रेमावेश आश्रय पाकर विविध रूपों प्रकट होता है। इस संपूर्ण अभिव्यक्ति की केन्द्रीय भावना होती है- मिलन की आशा, मिलन की अभिलाषा।

उपालंभ में अतीत के प्यार का स्मरण दिलाया जाता है। प्रिय की उपेक्षा कर व्यंग्य ~~किया~~ किये जाते हैं।

अन्य के प्रति प्रेम हो जाने से अपनों से अपनी पीड़ा का वर्णन और प्रिय का उपहास किया जाता है। गलत प्रेम संदेश पर मन की कटुता और कुढ़न व्यक्त की जाती है। कभी - कभी प्रिय से पुनः प्यार करने की मनुहार की जाती है। कभी - कभी अतीत के प्यार में अपने सम्भावित मूल्य पर पश्चताप किया जाता है।

इस संदर्भ में उपालंभ और व्यंग्य के अंतर को स्पष्ट कर लेना अपेक्षित है। ~~यद्यपि~~ यद्यपि उपालंभ और व्यंग्य दोनों मनुष्य की प्रतिशोधात्मक मनोवृत्ति के रूप हैं। उपालंभ के मूल में ईर्ष्या बैठी होती है। प्रेयसी या पत्नी को जब प्रेमी या पति से अपेक्षित प्रतिदान नहीं मिलता तो वह उपालंभ का आश्रय लेती है। उपालंभ विवशता की मुखर अभिव्यक्ति है। व्यंग में क्रोध तथा प्रति हिंसा का रूप अधिक प्रखर होता है। व्यंग्यों के तीखापन हृदय में ठेस पहुँचाने की प्रवृत्ति अधिक होती है। उपालंभ में दैन्य भावना की प्रधानता होती है। व्यंग्य में अपर पक्ष को उत्पीड़ित करने का भाव होता है। उपालंभ में अपनी हीनता - दीनता और विवशता की प्रधानता रहती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उपालंभ उत्पीड़न का रूप है और व्यंग्य परपीड़न का। यद्यपि उपालंभ एक विशेष भाव विधि का बोधक है और इस कारण इसका क्षेत्र ~~अनन्त~~ अत्यंत विस्तृत होता है, किन्तु इसकी जितनी रमणीय भावात्मक अभिव्यक्ति शृंगार रस में होती है उतनी अन्य रसों में नहीं। यही कारण है कि इसका अधिक प्रयोग शृंगार रस के अन्तर्गत हुआ है। शृंगार रस में भी प्रेमिका या प्रेमिकाओं के द्वारा यह भाव विशेष चमत्कारी होता है। यह ~~शृंगार~~ शृंगार के उभय पक्षों को मिलता है। शृंगार के संयोग पक्ष में नायिका सम्मुख उपस्थित अपने पक्ष में नायक को उपालंभ देती है। वह नायक के शरीर अंकित चिन्ह, जो नायिकाओं के साथ रति सुरत

प्राप्त करने से हैं उन्हें देखकर बड़े कौशल से उल्लेख करती हैं और नायक की भर्त्सना करती हैं। हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवियों के नायिकाओं का उपालंभ इसी प्रकार के हैं। इनके उपालंभ में ईर्ष्या भाव प्रधान होता है। उसमें हृदयगत वेदना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति नहीं होती, यह केवल मान का अंग मात्र है। मानहेतु वियोग के दो प्रकार हैं - एक है ईर्ष्या भाव का। शृंगार के वियोग पक्ष में इस उपालंभ की कई स्थितियाँ हैं। कभी प्रिय दुःख का दूत नायिका स्वागत रूप में अपने प्रिय को उपालंभ देती है। उसके उपालंभ में अतिरिक्त वेदना का उद्वेग तो रहता है, किन्तु तन्मयता एवं आशा-निराशा का अभिव्यंजन यहाँ दिखाई नहीं पड़ता। कभी नायिका प्रकृति के किसी उपादान पक्षी, मेघ, पवन आदि का आश्रय लेकर अपने प्रवासी प्रियतम को उपालंभ देती है। यद्यपि उपालंभ अपेक्षा कृत अधिक मुखर होता है किन्तु यह प्रायः संदेश काव्य का अंग बनकर रह जाता है। उपालंभ की सर्वाधिक मुखर अभिव्यक्ति तब होती है, जब प्रिय के किसी सहचर के मिल जाने पर नायिका उसके माध्यम से अपना उपालंभ प्रिय तक पहुँचाती है। इस प्रकार का उपालंभ हिन्दी साहित्य के भक्ति काल में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतः हिन्दी उपालंभ काव्य की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट स्वरूप इसी युग में उपलब्ध है। भक्तिकाल में न केवल गोपी और राधा का प्रत्युत कथित्य स्थलों पर मात्र हृदय का कोमल उपालंभ भी मिल जाता है। इतना ही नहीं दास्य भाव के भक्तों का अपने आराध्य के प्रति अभिव्यक्ति विनय भावना के अन्तर्गत भी यह भाव मिलता है।

संस्कृत और अपभ्रंश साहित्य में उपालंभ के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। संक्षेपतः सर्वप्रथम कालिदास के अपने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' के अंक पांच श्लोक एक में

दुष्यंत की पहली पत्नी हंसपादिका के द्वारा शकुंतला के प्रेम पाश में बंधे अपने दुष्यंत को लक्ष्य कर एक नई परम्परा का सूत्रपात किया।

हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम विद्यापति के पदों में राधा के कृष्ण के प्रति उपालंभ एवं उद्वेग पूर्ण चित्रण मिलता है। इस उपालंभ में राधा के यौवन-उद्वेलित विकलता के आवेग की प्रधानता है। सूरदास का 'भ्रमरगीत' उपालंभ काव्य का उत्कृष्ट निदर्शन है। श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है। संपूर्ण उपालंभ-व्यंजना से ही कहा गया है। इसलिए प्रत्येक पद बड़ा ही मार्मिक एवं सहृदय है। उद्धव के गंभीर बातों का उत्तर भी सूर ने गोपियों से सरल और व्यंजनात्मक उक्तियाँ दिलाया है। कृष्ण गोपियों को छोड़कर ब्रज से मथुरा चले आते हैं वहाँ जाकर गोपियों की सुध नहीं लेते, बल्कि कान में तेल डालकर सो जाते हैं। विरह प्रेम की कसौटी है - 'खोकर पाने में आनन्द है, उल्लास है, उमंग है, दिन में होली एवं रात में दीवाली है और पाकर खोने में दुःख है, दर्द है, बेचैनी है, छटपटाहट है, टीस है, और है वेदना की असीम कसक।

गोपियाँ इसे भोगती हैं। पत्र पर पत्र मथुरा भेजती हैं, कहने का अर्थ है कि गोपियों के पत्र से मथुरा का कूप भी भर जाता है पर कृष्ण का कोई संवाद नहीं आता। एक लंबी प्रतीक्षा प्रतीक्षा के बाद सजे हुए रथ पर उद्धव पधारते हैं और वे कृष्ण का संदेश न देकर निर्गुण का उपदेश देने लगते हैं। गोपियों की पीड़ा की सीमा नहीं रह जाती। वे व्यंग्य-बाण छोड़ने लगती हैं। उपालंभ का सागर लहराने लगता है -

प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी।
जैसे बधिक चुगाये, कपटि कर पीछे करत बुरी।।

कृष्ण धोखेबाज है, कपटी है, प्रेम के बदले छुरी घोंप रहे हैं। जिस प्रकार बहेलियाँ दाना डालकर पक्षियों को फंसा लेता है और उनकी जान ले लेता है उसी प्रकार कृष्ण ने हम गोपियों को फंसाकर छुरा घोंप दिया है और निष्ठुरता पूर्वक त्याग दिया है।

Scanned with CamScanner

गोपियाँ कहती हैं कि हमने उन्हें कल्पवृक्ष समझा था, आनन्द का भण्डार, सुख का निधान; परन्तु वे धोखेबाज निकले। गोपियाँ कहती हैं:-

"तिहारे प्रीति किधौं तलवारी
दृष्टि धारि करि मारि साँवरे घायल सब ब्रजनारी
प्रीति करि काहु न सुख लह्यो"

उपालंभ के पदों से सारा 'भ्रमरगीत' का खजाना भरा है। उपालंभ में कहीं-कहीं व्यंग्य भी है, विनोद भी। वियोग की धारा तो बहती ही है। उपालंभ में वक्ता का उद्देश्य आत्म संतोष होता है, जबकि व्यंग्य में दूसरे के हृदय के हृदय को कचोटना। अपनी उक्तियों को ~~गोपियाँ~~ व्यंग्य की धरातल पर उतारती गोपियाँ कहती हैं:-

"निर्गुण कौन देश को वासी।

मधुकर! हँसि समुझाय सौं है बुझति सचान हाँसि"

'भ्रमरगीत' की उक्ति लाक्षणिकता और व्यंजना कौशल से काम लिया है। इसके वचन वक्रता, वक्रोक्ति, वाग्वैदग्धता एवं बुद्धि विलास है। यही कारण है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल अन्ततः कहना पड़ा कि -"सूरदास का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्धता अंश 'भ्रमगीत' है। जिसमें गोपियों की वचन वक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। ऐसा सुन्दर उपालंभ काव्य और कहीं नहीं मिलता।" इतना कह लेने के बाद मन में एक सवाल कौंधता है कि माता हो या पत्नी, पत्नी हो या प्रेयसी, बहन या कोई अन्य संबंधी नारी वर्ग से ही पुरुष को क्यों ही उलाहना मिलती है। या उपालंभ के अवसर प्राप्त होते हैं इसका कारण समाज शास्त्र बतलाया गया। हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है, युग-युग से नारी पुरुष की दासी है, बांदी है। हर सबल मनमानी से काम लेता है। दुर्बल की आह निकलती है, नारी चाहे जिस रूप में हो पुरुष से दुर्बल है। अंततः उपालंभ के स्वर उसी के और से आते हैं। नये संविधान और सभ्यता के दौर में नारी जब सबला हो जाएगी तब उपालंभ के आलंबन तथा आश्रय दोनों बन जाएँगे।